6. (b) 'निरपेक्ष को अभिगृहीत किये बिना जैन दर्शन का सापेक्षतावादी सिद्धान्त तार्किक रूप से धारणीय नहीं हो सकता।' इस मत का समीक्षात्मक परीक्षण कीजिये तथा अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिये।

'The doctrine of 'Relativism' of Jain Philosophy cannot be logically sustained without postulating 'Absolutism'.' Critically examine this view and give reasons in the favour of your answer. 15

6. (c) मीमांसक न्याय के इस मत का कि अर्थापत्ति का अन्तर्भाव अनुमान में हो जाता है, किस प्रकार खन्डन कर अर्थापत्ति की एक स्वतन्त्र वैध ज्ञान स्त्रोत (प्रमाण) के रूप में स्थापना करते हैं ? समालोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

How do Mīmāṁsakas refute the Nyāya view that Implication (arthāpatti) is reducible to Inference (anumāna) and establish Implication as an independent means of valid knowledge (pramāṇa) ? Critically discuss. 15

7. (a) ज्ञान की स्वतःप्रामाण्यता की स्वीकृति के बावज़ूद प्रभाकर एवं कुमारिल भ्रमात्मक ज्ञान की व्याख्या में क्यों और कैसे भिन्न हैं ? विवेचन कीजिये।

Inspite of accepting the intrinsic validity of knowledge, why and how Prabhākar and Kumārila differ in their interpretation of erroneous cognition ? Discuss. 20

7. (b) बौद्ध दर्शन की त्रिरत्न की अवधारणा तथा इनके अन्तःसम्बन्धों की व्याख्या कीजिये। बौद्ध दर्शन के नैरात्म्यवाद के साथ त्रिरत्न की सुसंगतता का समीक्षात्मक परीक्षण कीजिये।

Explain Buddhist concept of Tṛratna and their internal relation. Critically examine the consistency of Tṛratnas with the Buddhist concept of No-soul (Nairātmyavāda). 15

7. (c) चारवाक के अनुमान के विरोध में दिए गए आक्षेपों का नैयायिक किस प्रकार प्रत्युत्तर देते हैं तथा अनुमान को एक स्वतन्त्र ज्ञान-स्रोत के रूप में स्थापित करते हैं ? समालोचनात्मक विवेचना कीजिए।

How do Naiyāyikas respond to Cārvāka's objections against inference (anumāna) and establish inference as an independent means of knowledge ? Critically discuss. 15

8. (a) 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नाऽपरः'। इस कथन के आलोक में अद्वैत वेदान्त में निरूपित ईश्वर, जीव एवं साक्षी की सत्तात्मक स्थिति की व्याख्या कीजिये।

'Brahma satyam jaganmithyā, jīvo Brahmaiva nāparaḥ'. In the light of this statement explain the ontological status of Iśvara, Jīva and Sākṣī as elucidated in Advaita Vedānta. 20

8. (b) श्रीअरविन्द द्वारा प्रतिपादित वैयक्तिक विकास हेतु त्रिविध रूपान्तरण की प्रक्रिया में समग्र योग की भूमिका की व्याख्या एवं मूल्यांकन कीजिये।

Explain and evaluate the role of integral yoga in the process of triple transformation for individual evolution as expounded by Sri Aurobindo. 15

8. (c) मध्वाचार्य की मोक्ष की अवधारणा रामानुजाचार्य की अवधारणा से कैसे भिन्न है ? व्याख्या कीजिये।

How does the concept of Liberation (Mokṣa) of Madhvācārya differ from that of Rāmānujācārya ? Explain. 15